BACCHON KI BHASHA SIKHNE KI KSHAMTA-PART 1

Dhvani Sanrachna, Varnamala, Vartani

Shaikshik Sandarbh July-August 1999

RAMAKANT AGNIHOTRI

READING GUIDE

MATERIAL PREPARED FOR NMRC, JNU & EKLAVYA,BHOPAL BILINGUAL PROJECT

BY

INDRANI ROY

NOVEMBER 2011

बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता

रमाकांत अग्निहोत्री

सारांश

इस लेख में बताया गया है कि बच्चों में भाषा के नियमों को सीखने की अन्दरूनी क्षमता होती है. लेखक कई उदाहरण देकर ये दिखाते हैं कि चार वर्ष के आयु में ही बच्चे भाषा के कई कठिन नियम केवल सीख ही नहीं लेते हैं, वे उनका सही प्रयोग भी कर लेते हैं. इसके अलावा लेखक पढ़ना सिखाने के कुछ प्रचलित नियमों का भी विरोध करते हैं जैसे के - क, ख, ग, घ से पढ़ना शुरु करवाना. वे कहते हैं कि जो बच्चा अपने भाषा को इतनी अच्छी तरह से खुद सीख लेता है उसे इस तरह पढ़ना सिखाने का मतलब नहीं है.

एक हिन्दी भाषी बच्चा बहुत ही आसानी से हिन्दी के नियमों को पकड़ लेता है. कौनसी ध्वनि कहाँ से निकाली जाती है और कैसे निकाली जाती है. *क* और *ख*, *ग* और *घ* के उच्चारण में क्या अलग है इन सब बातों को सिखाने की ज़रूरत नहीं होती वे आप ही से सीख लेते हैं.

शब्दों के उच्चारण में कुछ इस तरह के नियम होते है जो बच्चे के आसपास के लोगों को भी मालूम नहीं होता. जैसे के हिन्दी बोलने वाला कोई भी बच्चा ये जानता है कि कल और मन जैसे शब्दों के आखिर में अ का उच्चारण नहीं होता. उसी तरह वो ये भी जानता है कि *लड़का* में *ल* का उच्चारण पूरी

तरह होता है जबकी *कलकल* में नहीं.

हिन्दी में *अङ्क, सम्पर्क, कण्ठ* जैसे शब्द आजकल अनुस्वार लगाकर लिखे जाते हैं. यह इसलिए संभव है क्योंकि उच्चारण का एक नियम है -- मान लीजिये कि किसी शब्द में क-वर्ग की ध्वनि है और उससे पहले एक नासिक व्यंजन है तो इस शब्द में नासिक व्यंजन का उच्चारण हमेशा उसी जगह से होगी जहां से आने वाले व्यंजन का उच्चारण किया जायेगा. यानि ट-वर्ग (जो कि मूर्धन्य वर्ग है) के व्यंजनों के पहले नासिक व्यंजन का उच्चारण हमेशा *ण* होगा.

इसी तरह का एक नियम है शब्दों कि ज़्यादातर शब्द व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर इस तरह के होते है. इसीलिये *स्टेशन* शब्द को कहीं *सटेशन* तो कहीं *इस-टेशन* तो कहीं *टेशन* कहा जाता है. एक साथ तीन व्यंजन बहुत कम होते है और जब होते है तो इनमें कई नियम लागू होते हैं कि कौनसे व्यंजन एक साथ इस तरह के शब्दों में आयेंगे. ये नियम केवल शब्दों के अन्दर ही नहीं दो शब्दों के बीच में भी दिखते हैं जैसे अंग्रेज़ी में - *a car* पर *an apple*. *a apple* नहीं.

किसी बच्चे को यह सब सिखाने कि ज़रूरत नहीं होती बच्चा खुद ही यह नियम और ऐसे बहुत सारे नियम सीख जाता है. ये नियम केवल अनुकरण से सीखना संभव नहीं है. यह इसलिये संभव है क्योंकि बच्चों के अन्दर भाषा सीखने की एक अन्दरूनी क्षमता होती है.

लेखक इन सब बातों के आधार पर ये कहते हैं कि जब बच्चे खुद से ही ध्वनि और शब्द संरचना के नियम पकड़ कर भाषा सीख जाते हैं तो फिर

उन्हें *अ* से *आम* सिखाने का क्या मतलब है. वे भाषा सिखाने की इस विधि का विरोध करके कहते हैं कि बच्चे को गाना, कविता, कहानी सुनाइए रुचीकर वातावरण बनाइए, वर्तनी के नियम वो खुद ढूंढ लेगा.

****

<u>अभ्यास के लिये --</u>

1)
मंडंगस
फ्यूंस
आचंग
कांचलो
प्लैंजेंट
ठंठंणिया
बांटु
इन सब शब्दों में अनुस्वार का उच्चारण कैसा होगा? अनुस्वार हटाकर नासिक वर्ण लगाकर बताइये.

2)
जिस तरह *स्टेशन* शब्द में *स* और *ट* को कभी *सटेशन* और कभी *इसटेशन* बोला जाता है, हिन्दी में भी कुछ शब्दों में संयुक्ताक्षर के बीच में *अ* लगाकर बोला जाता है. कुछ उदाहरण दीजिये.

****